Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

ग्वालियर परंपरा के महान कलाकारों का सांगीतिक योगदान

KOMAL[1] & DR. PRERNA ARORA[2]

[1]Research Scholar, Faculty of Music and Fine Arts, University of Delhi, Delhi
[2]Supervisor, Faculty of Music and Fine Arts, University of Delhi, Delhi

सारांश

वर्तमान समय में ख्याल भारतीय शास्त्रीय संगीत का सबसे लोकप्रिय गायन बन चुका है। परिणामस्वरुप यह देश–विदेश में गायन विधा का सबसे प्रचलित प्रकार प्रस्तुत होता दिखाई देता है। ख्याल गायन को प्रचार एवं प्रसारित करने के लिए अनेक घरानों का अमूल्य योगदान रहा है। उसमें ग्वालियर घराना सबसे प्राचीन घराना कहलाता है। नत्थन पीरबक्श द्वारा स्थापित किये गए ग्वालियर घराने को अन्य सभी घरानों की गंगोत्री कहा जाता है। ग्वालियर घराने से अन्य कई घरानों का निर्माण हुआ है। इस घराने को विस्तृत रूप में गुरू–शिष्य परंपरा के रूप में वर्णित किया गया है। इस घराने की विशेषताओं की वजह से आज इसकी गायकी लोकप्रिय बनी हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्वालियर घराने की मूल परंपरा किस तरह थी, इस गायकी की क्या विशेषतायें थी? और कालान्तर से इस गायकी की किन-किन चीजों में बदलाव आते गये तथा आज इस गायकी का स्वरूप क्या है तथा इस घराने में किन–किन कलाकारो ने अपनी महतवपूर्ण भूमिका निभाई इन सभी विषयों पर चर्चा की जाएगी।

महत्वपूर्ण शब्द – घराना, ग्वालियर घराना, ख्याल, तानसेन, हद्दू हस्सू खान, गायकी अंग, शास्त्रीय संगीत।

भूमिका

ग्वालियर को संगीत का धाम कहा जाता है। कहा जाता हैं कि ग्वालियर का बच्चा भी सुर में रोता है। ग्वालियर ने ध्रुपद, ख्याल, तराना, टप्पा, अष्टपदी, पद और इसकी किस्मों जैसे शैलियों के नवाचार और लोकप्रियकरण में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। गायन की अनेक शैलियाँ यहाँ फली-फूलीं और अन्य घरानों में भी इन शैलियों को स्वीकार किया गया। ग्वालियर हिंदुस्तानी संगीत में घरानों की गंगोत्री कहलाता है, और इसमें संगीत सम्राट तानसेन, हस्सू खान और हद्दू खान, रहमत खान, निसार हुसैन खान, शंकर पंडित, एकनाथ पंडित, पं. बालकृष्णबुआ इचलकरंजीकर, पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर आदि इन महान संगीतकारों का अमूल्य योगदान रहा है। ग्वालियर संगीत प्रेमियों और संगीतकारों के लिए विशेष रूप से संगीत का तीर्थ स्थान प्राप्त कर चुका है। इस घराने ने राजाओं और महाराजाओं के शासनकाल को देखा है।

ग्वालियर घराने का उदय

संगीत जगत ग्वालियर के अतीत के लिए मुख्य रूप से दो राजवंशों - तोमरों और सिंधियाओं का सदैव ऋणी रहेगा। उन्होंने न केवल अपने दरबारों में शास्त्रीय संगीत का प्रचार किया बल्कि सामान्य जनता में भी रुचि पैदा की। औरंगज़ेब के शासनकाल के दौरान एक प्रशासक और कला के पारखी फकीरुल्लाह ने ग्वालियर को भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में सही माना है। राजा मानसिंह तोमर द्वारा लिखे गए ग्रंथ मानकुतुहल का फकीरुल्लाह ने 1619 ई. में फारसी में अनुवाद किया है। इस किताब में उन्होंने ग्वालियर की तुलना ईरान की सांस्कृतिक राजधानी सिराज से की है।

इस परंपरा की शुरुआत 14वीं सदी में हुई होगी और राजा मानसिंह तोमर के समय में यह अपने चरम पर पहुंच गई। 15वीं सदी में संगीत अपने पूर्ण विकसित रूप में था। सर्वाधिक प्रामाणिक संगीत ग्रंथ मानकुतुहल के अनुसार– संगीतज्ञों को भी सिद्ध कवि होना चाहिए अर्थात फकीरुल्लाह का कहना है कि राजा मान ने खुद अनेक पदो के बोल लिखे हैं। उनका दरबार विभिन्न संगीतकारों से सुशोभित था, उन्होने भी अनेक पद लिखे थे। इन पदो का साक्ष्य अभी तक नहीं मिला है न ही इन पदो की भाषा का पता चल पाया है। उस युग में जो भाषा विकसित हुई थी वह जौनपुर, मांडू, दिल्ली, मेवाड़ और गुजरात में फैल गई थी क्योंकि इन स्थानों पर भी

संगीत का विकास हो रहा था। उस समय संगीत और कविता साथ-साथ चलती थी। संगीतकार पूरी तरह से अपनी साधना के लिए समर्पित होने के कारण संगीत को उदात्त ऊंचाइयों तक ले गए लेकिन उन्होंने कभी अपने बारे में नहीं लिखा। दुर्भाग्य से ग्वालियर और उसके प्रसिद्ध संगीतकारों के बारे में पर्याप्त लेख अभी तक प्राप्त नहीं हुए है।

कला के क्षेत्र में उन्नति की दृष्टि से मुग़ल शासन से पहले और हर्षवर्धन के शासन काल के बाद का समय बहुत महत्वपूर्ण है। विशेषकर संगीत और स्थापत्य दोनों ही क्षेत्रों में काफी प्रगति हुई। चित्तौड़, जौनपुर, मांडू और ग्वालियर के मुस्लिम राज्य कला के केंद्र बन गए लेकिन कला का वास्तविक विकास और उत्कर्ष ग्वालियर में हुआ।

उस काल में जो भाषा विकसित हुई वह सर्वाधिक प्रामाणिक मानी जाती थी। इसे आधार मानकर ब्रज साहित्य का विकास हुआ। ग्वालियर का संगीत भारतीय के संगीत के रूप में प्रस्फुटित हुआ। 'रागमाला' के चित्रों में सम्माहित संगीत और चित्रकला के उच्च विचारों को देखकर कहा जा सकता है कि रागमाला चित्रों की परंपरा ग्वालियर से ही शुरू हुई थी। राजपूत काल में तोमर राजवंश ने 100 से अधिक वर्षों तक शासन किया। इस राजवंश के राजा मानसिंह (1486-1518) एक महान संगीतकार के रूप में एक उल्लेखनीय व्यक्ति थे।

लखनऊ के 'गुलाम रसूल' और 'मियां जानी' को कव्वाल बच्चे के वंशज कहा जाता था, जबकि अन्य कहते हैं कि वे स्वयं प्रसिद्ध कव्वाल बच्चे (बाल गायक) थे। किसी भी मामले में, वे अपने समय के अत्यधिक प्रचलित गायक थे। गुलाम रसूल लखनऊ के नवाब सुजाउद्दौला (1754-1775) और उनके बेटे नवाब आसफुद्दौला (1775-1795) के दरबारी संगीतकार थे। 'गुलाम रसूल' के बेटे और 'नवाब आसफुद्दौला' के दरबारी-संगीतकार 'गुलाम नबी (शोरी मियाँ)' एक अद्भुत 'गायक' और 'टप्पा' शैली के आविष्कारक थे। उनकी अधिकांश रचनाओं में 'शोरी' शब्द है, जो उनकी पत्नी का नाम है। उनके शिष्यों में के 'मनोहर प्रसाद मिश्रा' और 'हरि प्रसाद मिश्रा' (प्रसिद्ध) शामिल थे।

'शक्कर' और 'मक्खन खान' इस काल के पहले क्रम के गायक थे। उन्होंने अपने पिता 'गुलाम रसूल' और 'निर्मल शाह' से संगीत सीखा। उन्होंने अपने वंशजों को ही प्रशिक्षित किया। बाद में इन दोनों परिवारों में ख्याल गाने की होड़ लगी और पारिवारिक कलह में फंस गए। शक्कर खान के पुत्र बड़े मुहम्मद खान अपने समय के प्रसिद्ध गायकों में से एक थे। ग्वालियर और रीवा के दरबारी-संगीतकार के रूप में, वह सबसे पहले तान को ख्याल में पेश करने वाले थे। वह हद्दू खान, हस्सू खान, नत्थन खान, मुबारक अली खान आदि जैसे महान संगीतकारों के प्रशिक्षक थे। उन्हें ग्वालियर घराने का संस्थापक कहा जाता है। तानरस खान (दिल्ली) उनसे काफी प्रभावित थे। उन्होंने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की, एक लंबा जीवन व्यतीत किया और 1840 में रीवा में उनकी मृत्यु हो गई।

मक्खन खान के पुत्र नत्थन पीरबक्श खान एक प्रसिद्ध गायक थे। वह एक दरबारी संगीतकार और ग्वालियर के महाराजा दौलत राव सिंधिया (1794-1827) के गुरु थे। अपने वंशजों के अलावा, उन्होंने घग्गे खुदाबक्श खान को प्रशिक्षित किया, जो एक प्रमुख गायक और आगरा घराने के संस्थापक थे, क्योंकि वे बडे मुहम्मद खान से ज्यादा प्रभावित नहीं थे। नत्थन पीरबक्श के पुत्र कादिरबक्श खान ग्वालियर के महाराजा भिंकजी राव सिंधिया के दरबार में एक प्रतिभाशाली गायक थे। बड़े मुहम्मद खान के सबसे बड़े पुत्र मुराद अली खान एक प्रसिद्ध गायक थे। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर संगीत का प्रदर्शन किया। वे लंबे समय तक कलकत्ता में रहे और बंगाल के अघोरनाथ चक्रवर्ती और रामदास गोस्वामी को प्रशिक्षित किया।[1]

मुबारक अली खान (मृत्यु 1880) को बड़े मुहम्मद खान का नाजायज पुत्र कहा जाता है, वह अलवर के महाराजा शिवदीन सिंह का दरबारी-संगीतकार बन गया। उनके समय के प्रसिद्ध संगीतकार उन्हें बहुत सम्मान देते थे। हालांकि उन्होंने किसी छात्र को प्रशिक्षित नहीं किया। नत्थू खान (आगरा), अल्लादिया खान (अतरौली/जयपुर) आदि जैसे संगीतकार उनकी शैली से प्रेरित थे।

हस्सू खान (1859) और हद्दू खान (1875) अपने दौर के बहुत ही प्रतिभाशाली गायक थे। उन्होंने विशेष रूप से नत्थन पीरबक्स (दादाजी) व अपने परिवार में पारंपरिक संगीत की शिक्षा प्राप्त की और ग्वालियर के दरबारी-संगीतकार बन गए। ग्वालियर के महाराजा चाहते थे कि वे बड़े मुहम्मद खान की शैली सीखें, लेकिन पारिवारिक कलह के कारण बड़े मुहम्मद ने उन्हें नहीं पढ़ाया। अफवाह यह है कि जब बड़े मुहम्मद गाते थे तो वे सुनते थे, गुप्त रूप से अपनी शैली का अभ्यास करते थे, और ऐसे संगीतकार बन कर उभरे जिन्होंने ग्वालियर परंपरा को संगीत के क्षेत्र में एक नया जीवन और विचार प्रदान किया।

ख्याल का सुनहरा दौर

हस्सू, हद्दू और नत्थू खान नामक तीन भाइयों ने ग्वालियर की ख्याल गायकी को गौरव की ऊंचाइयों तक पहुंचाया। हद्दू खाँ के शिष्यों में मुख्यतः इनके पुत्र मुहम्मद खाँ और रहमत खाँ, भतीजे निसार हुसैन खाँ और मेंहदी हुसैन खाँ थे, इसके अतिरिक्त पं. बाला गुरु, पं. जोशी, बालकृष्ण इचलकरजिकर, बन्ने खाँ पंजाबी, इमदाद खाँ साहसवानी, इनायत हुसैन खाँ तथा नजीर खाँ और बहुत प्रसिद्ध हुए हैं। हुस्सू खाँ की शिष्य परम्परा का विस्तार अधिक बड़ा नहीं था, परन्तु पुन गुलेइमाम, वासुदेव जोशी, सखाराम तथा बड़े बालकृष्ण बुवा इनके उल्लेखनीय शिष्य थे। न खाँ की शिष्य परम्परा में इनके दत्तक पुत्र निसार हुसैन खाँ तथा शिष्य जयाजीराव सिंधिया का नाम प्रमुख है। निसार हुसैन खाँ के शिष्य परिवार में रामकृष्ण बुवा वडों, गणपतराव पंडित, शंकरराव पंडित तथा एकनाथ पंडित थे। शंकरराव पंडित के शिष्यों में पं. राजा भैया पूछवाले, पुत्र कृष्णराव पंडित, काशीनाथ मुले तथा भैया मालवणकर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।[2]

हस्सू खाँ की शिष्य परम्परा में से वासुदेव जोशी के पुत्र भैया जोशी के शिष्य बालकृष्ण बुवा इचलकरंजिकर थे, जिनकी प्रसिद्ध शिष्य परम्परा में पुत्र अण्णाबुवा इचलकरंजिकर, शिष्य गुण्डूबुवा इंगले, अनंत मनोहर, मिराशी बुवा तथा विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का विशिष्ट स्थान है। पं. विष्णु दिगम्बर की शिष्य परम्परा में पुत्र दत्तात्रय पलुस्कर, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, विनायकराव पटवर्धन, नारायण राव व्यास, बी. आर. देवधर तथा वामनराव आदि हुए हैं।[3]

पं॰ राजाभैया पूछवाले की शिष्य परम्परा में पुत्र बाला साहब पूछवाले, सदाशिव अग्निहोत्री, गोविन्दनातू गोविन्दराव राजरकर, गंगाप्रसाद पाठक तथा गोपीनाथ पंचाक्षरी आदि उल्लेखनीय है। पं. कृष्णराव शंकर पण्डित के शिष्यों में पुत्र भाउ पंडित, लक्ष्मण पंडित, चंद्रकात पंडित, एकनाथ सारोलकर, शरतचन्द्र अरोलकर तथा केशव सुरंगे आदि का नाम उल्लेखनीय है। व्यालियर घराने के आधुनिक काल के कलाकारों में नारायणराव पटवर्धन, विद्याधर व्यास, मालीनी राजरकर, वसंतराव राजोपाध्याय, लक्ष्मण पंडित, यशवत जोशी, वीणा सहसबुद्धे तथा काशीनाथ बोड्स आदि प्रमुख है।

ग्वालियर संगीतकारों के लिए एक तीर्थ स्थान बन गया। यह ख्याल गायकी का स्वर्ण युग था और देश भर से छात्र सीखने के लिए उमड़ पड़े थे। ग्वालियर का वातावरण भी उपयुक्त था। संगीतकारों को उनके शासनकाल के दौरान अत्यधिक सम्मान और सम्मान दिया जाता था, इतना अधिक कि सरकारी अधिकारियों को 15 या 20 रु॰ के मासिक वेतन का भुगतान किया जाता था, परंतु संगीतकार सैकड़ों रुपये कमाते थे। हाथी और घोड़े जिन्हें उस समय प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता था, राजा द्वारा संगीतकारों को भेंट किए गए थे। उस समय कागजी मुद्रा नहीं हुआ करती थी इसलिए वेतन चांदी के सिक्कों के रूप में दिया जाता था जो काफी भारी हुआ करता था।

उस समय समाज संगीत का उच्च सम्मान करता था, इसलिए संगीतकारों को बहुत सम्मानित किया जाता था। गुरु बिना किसी शुल्क के संगीत सिखाते थे। आवास की कोई समस्या नहीं थी क्योंकि यह मुफ्त में उपलब्ध हो जाता था और यहां तक कि गोरखी (सिंधियों के देवघर), छत्री और अन्य स्थानों पर भोजन भी आसानी से उपलब्ध था। इसके अलावा, यहां तक कि महाराजाओं और नागरिकों ने स्वेच्छा से संगीत के स्थानीय छात्रों को प्रतिदिन मुफ्त भोजन देकर मदद की जिसे ग्वालियर में भिक्षुकी कहा जाता

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

था। अधिकांश घरों में रात भर संगीतमय महफिलों के साथ बच्चे के जन्म की पंचमी और षष्ठी पूजा मनाई जाती है। ग्वालियर में सामान्य परिवारों विशेषकर महाराष्ट्रीयन समुदाय में साप्ताहिक 4-5 महफिलों का आयोजन किया गया। हर त्योहार और अवसर संगीत के माध्यम से या तो मंदिरों में या घरों में मनाया जाता था। दरअसल बच्चे के जन्म के मौके पर भी पूरी रात संगीतमय महफिलों का आयोजन किया जाता था।

ग्वालियर घराने की गायकी

इस गायिकी की प्रमुख विशेषता जोरदार और खुली आवाज का प्रयोग है। प्रारम्भ में राग वाचक स्वरों में आलाप गाकर तत्पश्चात् बन्दिश को गाया जाता है। इस घराने की अधिकतर विलम्बित ख्याल की चीजें झूमरा, आडाचारताल, तिलवाड़ा, विलम्बित एक ताल इत्यादि में निबद्ध होती हैं। इसके साथ ही ताल की बंदिशों में भी काफी विविधता पाई राती है। राग का विस्तार क्रमानुसार किया जाता है बोल आलाप और बालतानों में बचिश के शब्द के अर्थ के अनुसार ही लयकारी की जाती है। बंदिश का साहित्य भी विविधता पूर्ण होता है। विलम्बित रचना के शब्दों के अनुसार ही द्रुत रचना के शब्द होते हैं। बोल आलाप दुगुन व चौगुन लयकारियों का प्रदर्शन करते हुए किया जाता है। यह घराना केवल ख्याल गायन में ही उच्च नहीं है, अपितु ध्रुपद व धमार आदि सभी में उल्लेखनीय है।[4]

टप्पा अंग के ख्याल, तराने मिट तथा चतुरंग आदि गायन शैलियों के साथ लय की एकरूप गमक आदि सुन्दर अलंकरणों का प्रयोग गायिकी को रंजक एवं भावपूर्ण बनाने में पूर्णतः सक्षम है। इस घराने के ख़्याल ध्रुपद अंग के हैं और सभी तालों में इनका व्यवहार होता है। हर राग में लगभग 20-30 बन्दिशें निबद्ध हैं।[5]

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि ग्वालियर में संगीत का प्रमुख स्थान था, देश भर के संगीतकार ग्वालियर में प्रस्तुति देने के लिए खुद को भाग्यशाली मानते थे, क्योंकि यहां के संगीत प्रेमी ज्ञानी और विद्वान थे। उन्हें खुश करना एक काम था। प्रसिद्ध उस्ताद-पंडित ग्वालियर के संगीत प्रेमियों की स्वीकृति और प्रशंसा पाने में विफल रहे हैं, विष्णु पंडित के पुत्र पं शंकर पंडित जी ने ऐसे पारंपरिक, प्रमुख गुरुओं से सीखा। उनके साथ रहने का अवसर मिला।

ग्वालियर में लगभग सभी शैलियों के गुरु मौजूद थे

1. खयाल:– उस्ताद हस्सू, उस्ताद हद्दू, उस्ताद नत्थू खान, उस्ताद रहमत खान, उस्ताद निसार हुसैन खान, पंडित शंकर राव पंडित, पंडित एकनाथ पंडित, पंडित गणपत राव पंडित, पंडित वासुदेव बुआ जोशी, पं. बाबा दीक्षित, पं. बाला गुरुजी, पं. बड़े बालकृष्ण बुआ आदि शामिल हैं

2. ध्रुपद:– पं. चिंतामणि मिश्र, पं. नारायण शास्त्री

3. ठुमरी:– पं. भैया साहब गणपतराव

वादक

1. बीन वादक:– उस्ताद बंदे आल खान, पं. एकनाथ पंडित

2.सरोद वादक :– उस्ताद गुलाम अली खां, उस्ताद नन्हे खां

3. सितार वादक:– उस्ताद अमीर खान, उस्ताद बाबू खान, पं. एकनाथ पंडित, पं. श्रीपद बुआ मसुरकर

4. जलतरंग वादक :– उस्ताद सादत खां

5. हारमोनियम वादक:– पं. भैया साहब गणपतराव

6. सारंगी वादकः– उस्ताद सबित अल खान, उस्ताद मीर खान, उस्ताद पीर खान, उस्ताद हद्दू खान, उस्ताद चुंडे अजीम खान

7. पखावज एवं तबला वादक :– पं. कुडो सिंह, पं. सुखदेव सिंह, पं. जोरावर सिंह। महिला गायकों में ताताल्या, चुन्ना, गोरी मांगो, काली मांगो, चंद्रभागा, (भार्या साहब गणपत राव की मां), सुखिया और अन्य शामिल थीं।

देश भर से संगीत प्रेमी और शिष्य ग्वालियर में सीखने के लिए आते थे और फिर अपने मूल स्थानों को लौट जाते थे। इस प्रकार ग्वालियर गायक पूरे भारत में फैल गये और अमर हो गये। ग्वालियर संगीत का घर था और संगीत ग्वालियर की शान थी।[6]

ग्वालियर घराने के बुजुर्ग कलाकार

मोहम्मद खाँ, रहिमत खाँ (भूगंधर्व), बब्बु खाँ, बाळासाहेब गुरुजी, बाबा दीक्षित, देवजी बुवा, बडे बाळकृष्णबुवा, वासुदेवबुवा जोशी, निसार हुसेन खाँ, शंकरराव पंडित, रामकृष्णबुवा वझे, कुंडलगुरु उमडेकर, बाळकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, विष्णु दिगंबर पलुस्कर, अनंत मनोहर जोशी, भाटे बुवा, राजाभैय्या पूछवाले, कृष्णराव पंडित, शरच्चंद्र आरोलकर, ओंकारनाथ ठाकूर, शंकरराव बोडस, लक्ष्मणराव बोडस, शंकरराव व्यास, नारायणराव व्यास, विनायकबुवा पटवर्धन, कुमार गंधर्व, यशवंतबुवा जोशी, अशोक दा. रानडे, शरद साठे, वीणा सहस्रबुद्धे, उल्हास कशाळकर, विद्याधर व्यास, मालिनी राजूरकर आदी ।

ग्वालियर घराने के वर्तमान कलाकार

एल. के. पंडित, मधुकर जोशी, शुभा मुद्गल, नीला भागवत, अमरेन्द्र धनेश्वर, सुधा पटवर्धन, विकास कशाळकर, जयश्री पाटणेकर, शुभदा पराडकर, जयंत खोत, राम देशपांडे, केदार बोडस, कलापिनी कोमकली, शाश्वती मंडल, मीता पंडित, मंजूषा पाटील, शशांक मक्तेदार, अपूर्वा गोखले, पल्लवी जोशी, आदी।

हद्दू खां और हस्सू खां अपने समय के सर्वश्रेष्ठ गायक थे। निसार हुसैन खां की आवाज दमदार थी और वह चारों पट की गायकी गा लेते थे। विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने गीतों में से श्रृंगार रस के अश्लील शब्दों को हटाकर भक्ति और करुण रस को स्थान दिया। यदि नत्थन- पीरबख्श से इस घराने की शुरूआत मानी जाए तो लक्ष्मण कृष्णराव पंडित, विद्याधर व्यास, जितेंद्र अभिषेकी, मालिनी राजुरकर आदि आठवीं-नवीं पीढ़ी के हैं। ओंकारनाथजी के गायन में अद्वितीय सौंदर्य, गहराई और शुद्धता थी। वह 1933 में इटली में अंतर्राष्ट्रीय संगीत-सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए। इसके बाद उन्होंने जर्मनी, हालैंड, बेल्जियम, फ्रांस, लंदन, वेल्स, स्विट्जरलैंड आदि देशों में कार्यक्रम प्रस्तुत किए। विनायक रावजी फिल्म माधुरी में उस जमाने की चर्चित अभिनेत्री सुलोचना के साथ मुख्य भूमिका निभाई थी। इन्होंने सात भागों में राग विज्ञान, तीन भागों में बाल संगीत, तबला-मृदंग वादन पद्धति आदि पुस्तकें तथा अपने गुरु विष्णु दिगंबर पलुस्कर की जीवन-कथा लिखी। पं. नारायण राव जी राग की सुव्यवस्थित बढ़त के साथ ही एक-के-बाद-एक सरगम की तानें और बोलतानें सुर और लय में बंधकर एक अजीब चमक पैदा करती थीं। शंकर राव ने ख्याल और टप्पा-गायन में काफी यश अर्जित किया। रामकृष्ण बुवा वस्तुतः एक तपस्वी संगीतज्ञ थे। उन्होंने 1920-31 के दौरान मंच गीतों को संगीत दिया।

निष्कर्ष

परिणामस्वरूप हम यह कह सकते है कि ग्वालियर घराने की गायकी और उनके कलाकारों ने संगीत के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया है। इस प्रकार निष्कर्ष तौर पर हमनें यह देखा कि ग्वालियर घराने की गायकी शैली हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को एक उच्चतर स्तर पर पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। इस घराने के गायकों ने शास्त्रीय संगीत के मूल सिद्धांतों को गहराई से समझा और इन्होंने राग-रंग के क्षेत्र में अपनी अद्वितीय पहचान बनाई। उन्होंने विभिन्न रागों को गहराई से अध्ययन किया और उनके विशेषताओं को समझा है। इसके परिणामस्वरूप, उनके गायन में रागों की विविधता, भावपूर्णता, और उनके उच्चारण

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

की स्वर्णिमता देखी जा सकती है। ग्वालियर घराने की संगीत परंपरा में कुछ खास बातें दिखाई देती हैं। पहली तो यह कि वर्तमान में इस घराने के शिष्य आठवीं-नवीं पीढ़ी में आते हैं। दूसरी यह कि कुछ संगीतज्ञों की शिष्य परंपरा तो काफी समृद्ध रही जब कि कुछ संगीतज्ञ शिष्य परिवार बना ही नहीं पाए। ऐसे संगीतज्ञों को छोड़ दें तो बाकी के परिवार में ही एक से लेकर दो पीढ़ी तक संगीतकार हुए।

ग्वालियर घराने की अगली पीढ़ी में जिन लोगों का नाम आता है उनमें पंडित ओंकारनाथ ठाकुर के शिष्य पी. एन. बर्वे, फिरोज के. दस्तूर, राजाभाऊ सोनटक्के और बलवंत राय भट्ट, पंडित विनायक राव पटवर्धन के पुत्र नारायण राव पटवर्धन, डी. वी. पलुस्कर एवं सुनंदा पटनायक, पंडित नारायण राव व्यास के पुत्र विद्याधर व्यास, पंडित एकनाथ सोलकर, पी. डी. सप्तर्षि, राजा भैया पूछवाले के पुत्र बाला साहब पूछवाले, गोविंद राजुरकर शामिल हैं।

ग्वालियर घराने की आज की पीढ़ी- चाहे वह लक्ष्मण कृष्णराव पंडित और उनकी पुत्री मीता पंडित की हो, सुमति मुटाटकर और विद्याधर व्यास तथा मालिनी राजुरकर की हो, वीणा सहस्रबुद्धे या मल्लिकार्जुन मंसूर के पुत्र राजशेखर की हो या उन जैसे अन्य गायकों की हो, जिन्होंने इस घराने की गायकी सीखी है और इस ख्याल गायकी को निरंतर आगे बढ़ा रही है।

सन्दर्भ

Sharma, Amal Das, Musicians Of India, Past and Present Gharanas of Hindustani Music and Genealogies, Naya Prokosh publication, Calcutta, 1993

‘यमन’, अशोक कुमार, संगीत रत्नावली, अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़, 2018, पृष्ट. 492

चौबे, डॉ० सुशील कुमार, संगीत के घरानों की चर्चा, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1984, पृ. 91

खुराना, डा. शन्नो, ख़याल गायकी में विविध घराने, सिद्धार्थ पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1995, पृ.61

खुराना, डा. शन्नो, ख़याल गायकी में विविध घराने, सिद्धार्थ पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1995, पृ. 10

Pandit, Dr. Meeta, India's Heritage of Gharana Music Pandits वf Gwalior, Shubhi Publications, Gurgaon 2018, page No-33